६१६ बंबई, आषाढ़ वदी २, रवि, १९५१

श्रीमद् वीतरागको नमस्कार

शुभेच्छासंपन्न भाई अंबालाल तथा भाई त्रिभोवनके प्रति, श्री स्थंभतीर्थ।

भाई अंबालालके लिखे चिट्ठी-पत्र तथा भाई त्रिभोवनका लिखा पत्र मिला है। अमुक आत्मदशाके कारण विशेषतः लिखना, सूचित करना नहीं हो पाता। जिससे किसी मुमुक्षुको होने योग्य लाभमें मेरी तरफसे जो विलंब होता है, उस विलंबको निवृत्त करनेकी वृत्ति होती है; परंतु उदयके किसी योगसे अभी तक वैसा ही व्यवहार होता है।

आषाढ़ वदी २ को इस क्षेत्रसे थोड़े समयके लिये निवृत्त हो सकनेकी संभावना थी, उस समयके आसपास दूसरे कार्यका उदय प्राप्त होनेसे लगभग आषाढ़ वदी ३० तक स्थिरता होना संभव है। यहाँसे निकलकर ववाणिया जाने तक बीचमें एकाध दो दिनकी स्थिति करना चित्तमें यथायोग्य नहीं लगता। ववाणियामें कितने दिनकी स्थिति संभव है, यह अभी विचारमें नहीं आ सका है, परंतु भादों सुदी दशमीके आसपास यहाँ आनेका कुछ कारण संभव है और इससे ऐसा लगता है कि ववाणिया श्रावण सुदी १५ तक अथवा श्रावण वदी १० तक रहना होगा। लौटते समय श्रावण वदी दशमीको ववाणियासे निकलना हो तो भादों सुदी दशमी तक बीचमें किसी निवृत्तिक्षेत्रमें रुकना बन सकता है। अभी इस संबंधमें अधिक विचार करना अशक्य है।

अभी इतना विचारमें आता है कि यदि किसी निवृत्तिक्षेत्रमें रुकना हो तो भी मुमुक्षु भाइयोंसे अधिक प्रसंग करनेका मुझसे होना अशक्य है, यद्यपि इस बातपर अभी विशेष विचार होना संभव है।

सत्समागम और सत्शास्त्रका लाभ चाहनेवाले मुमुक्षुओंको आरंभ परिग्रह और रसस्वादादिका प्रतिबंध कम करना योग्य है, ऐसा श्री जिनादि महापुरुषोंने कहा है। जब तक अपने दोष विचारकर उन्हें कम करनेके लिये प्रवृत्तिशील न हुआ जाये तब तक सत्पुरुषका कहा हुआ मार्ग परिणाम पाना कठिन है। इस बातपर मुमुक्षु जीवको विशेष विचार करना योग्य है।

निवृत्तिक्षेत्रमें रुकने संबंधी विचारको अधिक स्पष्टतासे सूचित करना संभव होगा तो करूँगा। अभी यह बात मात्र प्रसंगसे आपको सूचित करनेके लिये लिखी है, जो विचार अस्पष्ट होनेसे दूसरे मुमुक्षु भाइयोंको भी बताना योग्य नहीं है। आपको सूचित करनेमें भी कोई राग हेतु नहीं है। यही विनती।

आ० स्व० यथायोग्य।